CHETANA
International Journal of Education
Impact Factor
SJIF-5.689
Peer Reviewed/
refereed Journal
ISSN-
Print-2231-3613,
Online-2455-8729

Prof.A.P.Sharma (25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th May 2020, Revised on 25th May 2020; Accepted 10th June 2020

शोध–पत्र

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की अनुभव के आधार पर मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन

* श्रीमती किरण बिश्नोई
शोधकर्त्री एवं सहायक आचार्य
ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षक महाविद्यालय
संगरिया, हनुमानगढ़, राजस्थान
ईमेल– kiranbishnoi33@gmail.com, मोबाईल–9462511129

मुख्य शब्द – *अधिगम संसाधन, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, संचार प्रौद्योगिकी, दृश्य–श्रव्य संसाधन आदि।*

सारांश

अध्ययन के परिणाम से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष प्रधानाचार्यों और महिला प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों (OER) के प्रति जागरूकता पर प्रकाश डालने में मदद मिलेगी। यह शोध ग्रामीण और शहरी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने में भी मदद करेगा।

प्रस्तापना

अधिगम संसाधन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं क्योंकि वह शिक्षकों को एक प्रभावी कक्षा कक्ष वातावरण बनाने में और विद्यार्थियों को अधिगम में सक्रिय भागीदारी निभाने में सहायता करते हैं। अधिगम संसाधनों द्वारा समर्थित कक्षा कक्षों में अधिगम अधिक जीवंत एवं प्रभावी होता है परंपरागत दृश्य–श्रव्य संसाधनों से भिन्न, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (Information and Communication Technology-ICT) के विकास ने विविध नवाचारी शिक्षण–अधिगम संसाधन प्रदान किये हैं जिनका शिक्षकों को अपने शिक्षण–अधिगम गतिविधियों में उपयोग करने की जरूरत होती है। मुक्त शैक्षणिक संसाधन (Open Educational Resources-OERs) ऐसे संसाधन है जो इंटरनेट पर सहर्ष उपलब्ध हैं। शिक्षक ऐसे संसाधनों का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र हैं। उन्हें उन मुक्त शैक्षणिक संसाधनों को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अपनाने, स्वीकृत करने व चयन करने की आवश्यकता होती है।

मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resource)

Open Educational Resource (मुक्त शैक्षिक संसाधन) वो संसाधन है जिन्हें हम शिक्षा के लिए प्रयोग करते है। ये इंटरनेट पर उपलब्ध वह सामग्री है जिसके लिए हमें कोई पैसे नहीं देने पड़ते। ये आसानी से प्रयोग तथा परिवर्तन की जा सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक नवीन संसाधन है जिससे हम सूचना एवं संचार प्रौद्यागिकी (आई.सी.टी.) के माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर सकते है तथा अपने नोटस्, पी.पी.टी. पी.डी.एफ. इत्यादि बनाने के लिए काम ले सकते है तथा दूसरों के फ्री प्रयोग के लिए इंटरनेट पर भी उपलब्ध करवा सकते हैं।

OER के दृश्य प्रस्तुति से शिक्षण प्रभावी बन गया है। OER में बहुत से ऐप ऐसे है जो शैक्षणिक उद्देश्य से काम में लिए जाते है। इसके उपयोग से शिक्षक अपने विद्यार्थियों को शिक्षण साम्रगी, गृहकार्य आदि उपलब्ध करा सकते है।

OER परियोजनाएं सभी लोगों के लिए सीखने तक पहुँच पाती हैं। विद्यार्थियों के लिए, गैर–परंपरागत समूहों के लिए और इस तरह उच्च शिक्षा में हिस्सा लेने की कोशिश की जा सकती है। ये आजीवन शिक्षा को बढ़ावा देने का एक कारगर तरीका हो सकता हैं। व्यक्तियों और सरकार के लिए और अनौपचारिक तथा औपचारिक शिक्षा के बीच अंतर को बढ़ा सकते हैं।

प्रधानाचार्य एवं नेतृत्व

विद्यालय की गुणवत्ता सुनिश्चित करने व प्रबन्धन में प्रधानाचार्य सबसे प्रमुख भूमिका निभाते हैं। संस्था प्रधानों का यह दायित्व है कि वे शिक्षकों के साथ मिलकर यह सुनिश्चित करें कि 'विद्यालय में हर बच्चा सीखे' इस हेतु उपयुक्त वातावरण है। 'सकारात्मक वातावरण' से अभिप्राय कक्षा–कक्षीय वातावरण से है जिसमें शिक्षक व विद्यार्थी, सहजता व सक्रियता से ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न हों।

नेतृत्व के अभाव में सफलता असंभव है। स्कूल प्रधानाचार्य के नेतृत्व का स्कूल के कुशल संचालन में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अच्छे प्रधानाचार्य उत्कृष्ट शिक्षकों को आकर्षित करने, उसकी कार्यक्षमता को विकसित करने तथा बनाए रखने में सक्षम हैं। वे लक्ष्यों को पूरा करने के लिए संरचनाएँ बनाने और संसाधनों को जुटाने में भी सक्षम हैं। दूसरों के साथ नेतृत्व को भी साझा करने में सक्षम हैं।

प्रधानाचार्य केवल नियम कानून को पालन करने वाला न होकर अपने टीम के प्रभावी नेतृत्व के लिए भी उत्तरदायी है। वह प्रभावी निर्देश के साथ अपनी टीम को विकसित करता है। प्रधानाचार्य शिक्षा के लिए वातावरण बनाने में सहायता करता है ताकि सभी छात्र अकादमिक समानता प्राप्त कर सकें।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के दत्त संकलन कार्य हेतु राजस्थान राज्य के विभिन्न जिलों के 500 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 500 प्रधानाचार्यों का चयन किया गया, जिनमें से 250 पुरूष प्रधानाचार्यों व 250 महिला प्रधानाचार्यों को शामिल किया गया।

विधि

इस शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।

उपकरण

इस हेतु शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित **''मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता मापनी''** का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी

शोध कार्य हेतु शोधकर्त्री द्वारा सांख्यिकी के रूप में मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

शोध के उद्देश्य

1. राजस्थान राज्य के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
2. राजस्थान राज्य के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 10 वर्ष से कम अनुभव व 10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

विश्लेषण

1. **सारणी संख्या–4.1**

समूह (प्रधानाचार्य)	संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
पुरूष	250	171.09	20.32	1.49	सार्थक अन्तर नहीं है।
महिला	250	168.32	21.20		

सारणी संख्या 4.1 के अनुसार राजस्थान राज्य के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 171.09 और 168.32 है। इन दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 20.32 और 21.20 है तथा दोनों के मध्यमानों के अन्तर का टी–मूल्य 1.49 है। प्राप्त टी–मान स्वतंत्रता की कोटि 498 पर 0.05 के विश्वास मूल्य 1.64 तथा 0.01 के विश्वास मूल्य 2.33 से कम है।

अतः राजस्थान राज्य के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

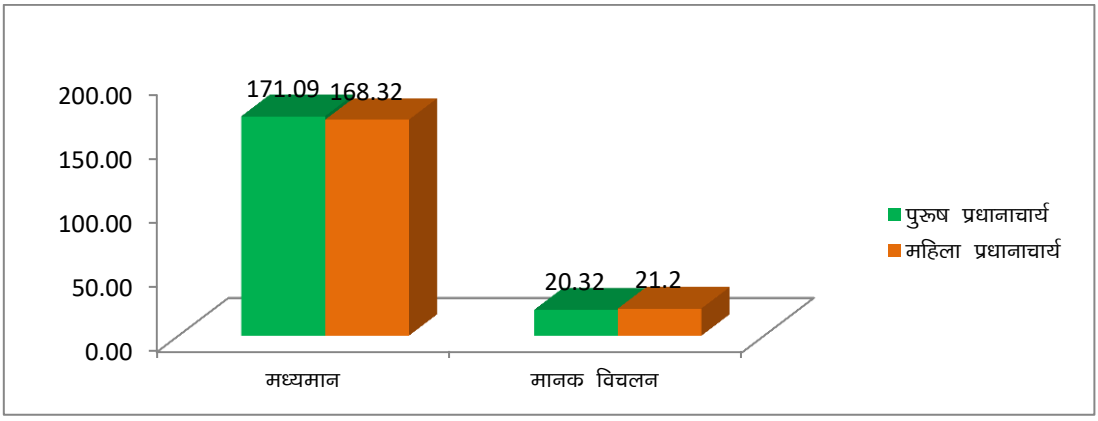

2. **सारणी संख्या–4.2**

समूह (प्रधानाचार्य)	संख्या	मध्यमान	मानक–विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
10 वर्ष से कम अनुभव	161	169.75	20.68	0.40	सार्थक अन्तर नहीं है।
10 वर्ष से अधिक अनुभव	339	170.52	19.18		

सारणी संख्या 4.2 के अनुसार राजस्थान राज्य के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 10 वर्ष से कम अनुभव वाले व 10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 169.75 और 170.52 है। इन दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 20.68 और 19.18 है तथा दोनों के मध्यमानों के अन्तर का टी–मूल्य 0.40 है। प्राप्त टी–मान स्वतंत्रता की कोटि 498 पर 0.05 के विश्वास मूल्य 1.64 तथा 0.01 के विश्वास मूल्य 2.33 से कम है।

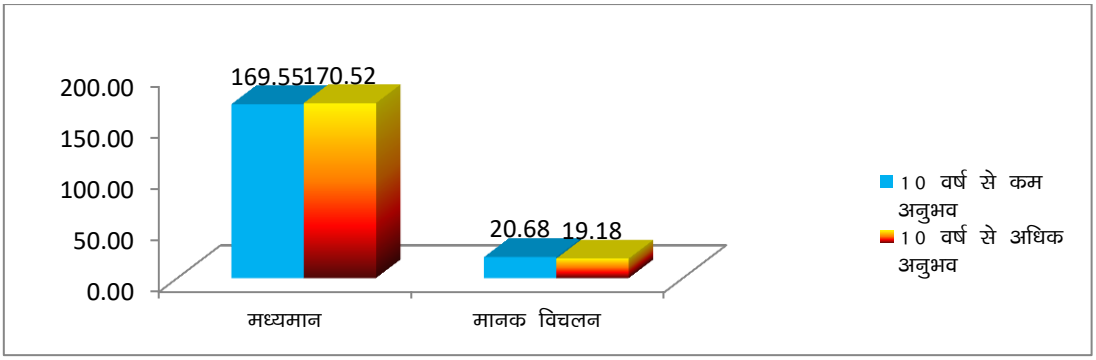

अतः राजस्थान राज्य के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 10 वर्ष से कम अनुभव वाले व 10 वर्ष से अधिक अनुभव वाले प्रधानाचार्यों की मुक्त शैक्षिक संसाधनों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, के. सी. (2007). 'विद्यालय प्रशासन', आर्य बुक डिपो, दिल्ली।
2. अस्थाना डॉ. वि. (2009). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2.
3. एलिस, आर.एस. (1951). *एज्युकेशन साइकोलॉजी* ।
4. जैन, किशनचंद (1999). 'शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. बार्ग वाल्टर आर. (1965). एजूकेशन रिसर्च इन इन्ट्रोडक्शन, नई दिल्ली, डेविड सिक्की कम्पनी, नई दिल्ली।
6. राय, पारसनाथ (2007). 'शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय संगठन', लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
7. Agrawal, J.C. (1983). Educational Research, N.Delhi, Arya Book Depot.
8. Allen, I., & Seaman, J. (2016). Opening the textbook: Educational resources in U.S. higher education, 2015-16. Report published by Babson Survey Research Group. Retrieved from http://www.onlinelearningsurvey.com/oer.html.
9. Armellini, A., & Nie, M. (2013). Open educational practices for curriculum enhancement. Open Learning: The Journal of Open, Distance and e-Learning,28(1), 7–20. doi:10.1080/02680513.2013.796286
10. Barr, A.S., (1959). 'Research Methods', in Chester W.Harris (Ed.), Encyclopaedia of Educational Research, New York, Macmillan.
11. Hilton III, J. L., Gaudet, D., Clark, P., Robinson, J., & Wiley, D. (2013). The adoption of open educational resources by one community college math department. The International Review of Research in Open and Distributed Learning,14(4), 37–50. doi:10.19173/irrodl.v14i4.1523
12. Hilton, J. (2016). Open educational resources and college textbook choices: A review of research on efficacy and perceptions. Educational Technology Research and Development,64(4), 573–590.doi:10.1007/s11423-016-9434-9.

13. Judith, K., & Bull, D. (2016). Assessing the potential for openness: A framework for examining course-level OER implementation in higher education. Education policy analysis archives,24(42).doi:10.14507/epaa.24.193.
14. Pitt, R. (2015). Mainstreaming Open Textbooks: Educator Perspectives on the Impact of OpenStax College Open Textbooks, The International *Review of Research in Open and Distributed Learning (IRRODL), 16(4), pp. 133–155,*
15. Rolfe, V. (2012). Open educational resources: staff attitudes and awareness. Research in Learning Technology, 20(1), 1–13. doi:10.3402/rlt.v20i0/14395
16. Santosh, Gema; Ferran, Nuria; Abadal, Ernest (2017) Repositories of open educational resources an assessment of reuse and educational aspects. International Reviews of Research in Open and Distance Learning 18(5). Doi:10.19173/irrodl.v18i5.3063.
17. Silio, T. (2005). Fundamentos tecnologicos del acceso abierto: Open archives initiative y open archival information system. technological foundations of open access: Open archives initiative and open archival information system. Professional De La Information, 14(5), 365-366, 368-370, 372-374, 376-380.
18. Wiley, D. (2018). The OER Adoption Impact Calculator, version 1.2. Retrieved from http://impact.lumenlearning.com/
19. Zhang, M., & Li, Y. (2017). Teaching experience on faculty members' perceptions about the attributes of Open Educational Resources (OER). International Journal of Emerging Technologies in Learning,12(4), 191–199. doi:10.3991/ijet.v12i04.6638.

Webliography

1. http://openedgroup.org/review
2. http:// openedgroup.org/toolkit
3. http://www.oro.open.ac.uk
4. https://search.creativecommons.org/
5. https://www.oercommons.org/

**** Corresponding Author:***

श्रीमती किरण बिश्नोई

शोधकर्त्री एवं सहायक आचार्य

ग्रामोत्थान विद्यापीठ शिक्षक महाविद्यालय

संगरिया, हनुमानगढ़, राजस्थान

ईमेल– kiranbishnoi33@gmail.com, मोबाईल–9462511129